Dr.pragya kumari
Asst.prof.
Dept.of psychology
H.D.Jain college Ara

Scanned with CamScanner

Manic-depressive Psychosis

उत्साह-विषाद मनोविकृति एक ऐसी मैदानिक समस्या है जिसका सम्बन्ध रोगी की भावात्मक प्रक्रिया से होता है। इसके रोगी की चित्तवृत्ति एवं संवेगात्मक भाव बिना किसी कारण के बदलते रहते हैं।

~~भावात्मक विकृति के तीन पक्ष होते हैं~~

~~(1) Manic Phase~~ इस तरह के मानसिक रोग में रोगी अचानक काफी उत्तेजित एवं उत्साहित हो जाता है, फिर थोड़ी देर तक सामान्य रहने पर अकारण वह अत्यधिक उदास एवं दुःखी हो जाता है।

Clinical Picture or Symptoms →

इस मानसिक रोग में तीन तरह के अवस्थायें पाये जाते हैं —

(1) **उत्साह पक्ष** → इस अवस्था में रोगी में मनो-पेशीय क्रियाएँ बढ़ जाती हैं। विचारों में उड़ान एवं ध्यान में चंचलता अधिक होती है। उत्साह की तीन अवस्थाएँ होती हैं —

(i) **साधारण उत्साह की अवस्था** → इस अवस्था में उत्तेजना एवं हर्ष की क्रिया की मात्रा ~~लेकर~~ साधारण होता है।

(ii) **तीव्र उत्साह की अवस्था** — इस अवस्था में उत्तेजना एवं हर्ष की क्रिया की मात्रा ~~स्तर~~ अधिक हो जाती है। रोगी चिड़चिड़े स्वभाव का हो जाता है तथा उसमें अधीरता बढ़ जाती है।

(iii) **अति तीव्र उत्साह की अवस्था** → इस अवस्था में रोगी में उत्तेजना एवं हर्ष की क्रिया ~~के~~ स्तर की तीव्रता उच्चतम मात्रा में होती है। रोगी दृष्टि विभ्रम का अनुभव करने लगता है व श्रवण विभ्रम एवं एवं आक्रमणशील बन जाता है। वह अस्पताल में भरती करना आवश्यक बन जाता है।

(2) विषाद की अवस्था → इस अवस्था में रोगी विषाद, खिन्नता, उदासीनता तथा निराशा का अनुभव करता है तथा उसकी मनोशारीरिक क्रिया काफी घट जाती है। विषाद की तीन अवस्थाएँ होती हैं —

(i) साधारण विषाद — इस अवस्था में विषाद की मात्रा सबसे कम होती है। रोगी में शारीरिक एवं मानसिक क्रियाएँ धीमी पड़ जाती हैं तथा रोगी में निरुत्साह एवं अनुत्साह बढ़ जाता है।

(ii) तीव्र विषाद — इस अवस्था में रोगी में शिथिलता और बढ़ जाती है एवं मनोक्रियात्मक व्यवहार अधिक मंद पड़ जाते हैं। रोगी में खुदकुशी की भावना तीव्र हो जाती है।

(iii) अति तीव्र विषाद → इस अवस्था में विषाद की गंभीरता अधिक बढ़ जाती है। रोगी बोलना बंद कर देता है। विभ्रम, व्यामोह एवं स्थितिभ्रांति अधिक तीव्र हो जाता है।

[3] मिश्रित अवस्था → इस अवस्था में रोगी में उत्साह तथा विषाद का मिश्रित पक्ष देखा जाता है। रोगी के उत्साही अवस्था में होते हुए भी मनोशारीरिक क्रिया घट जाती है और विषाद की अवस्था में मनोशारीरिक क्रिया बढ़ जाती है।

Dynamics or Causes of M.D.P. →

उत्साह विषाद मनस्ताप उत्पन्न होने के जैविक, मनोवैज्ञानिक और सामाजिक कारण निम्नवत हैं —

(i) जैविक कारण — इसमें वंशपरम्परा, शारीरिक रचना एवं दैहिक विकृति महत्वपूर्ण हैं —

(i) वंशपरम्परा — Kallmann (1952) के अध्ययनों से पता चलता है कि सामान्य जनसंख्या की अपेक्षा उत्साह-विषाद के संबंधियों में इस मानसिक रोग का दर अधिक होता है और इस मानसिक रोग के विकास में वंशपरम्परा का निश्चित हाथ होता है।

Scanned with CamScanner

(ii) शारीरिक रचना — क्रेशमर (1925) के अनुसार गोलकाय प्रकार व्यक्तियों में और शेल्डन (1954) के अनुसार गोलाकार प्रकार व्यक्तियों में ~~उन्माद~~ उत्साह-विषाद मनस्ताप उत्पन्न होने की संभावना अधिक होती है।

(iii) दैहिक विकृति → पैवलव के अनुसार उत्साह का कारण मस्तिष्क के उच्च केन्द्रों में उत्तेजना का बढ़ जाना और अन्तर्बाधा (Inhibition) का कम हो जाना है। इसके विपरीत, जब अन्तर्बाधा बढ़ जाती है और उत्तेजना कम हो जाती है तो रोगी में विषाद का क्रम शुरू हो जाता है।

(2) मनोवैज्ञानिक कारक — अध्ययनों से ~~यह~~ ज्ञात होता है कि जो बच्चे अधिक अभिलाषी होते हैं; आगे चलकर वे इस मानसिक रोग से पीड़ित हो जाते हैं। इसी तरह जो बाध्यता, चिंता तथा द्वंद्व विवेक से पीड़ित होते हैं उनमें इस मानसिक रोग के होने की संभावना अधिक होती है। बहिर्मुखी की अपेक्षा अन्तर्मुखी लोग इससे अधिक पीड़ित होते हैं।

(3) सामाजिक - सांस्कृतिक कारक ⟶ उत्साह-विषाद के विकास में शैक्षिक स्तर, व्यावसायिक स्तर, तथा सामाजिक-आर्थिक स्तर से सम्बन्धित निश्चित प्रमाण का उल्लेख नहीं मिलता है; लेकिन सांस्कृतिक विभिन्नता का थोड़ा बहुत प्रभाव इस मानसिक रोग के विकास पर अवश्य पड़ता है।

Treatment — उत्साह-विषाद रोगियों के लिए विद्युत आघात चिकित्सा, व्यावसायिक चिकित्सा, मनोरंजन चिकित्सा तथा औषध चिकित्सा का उपयोग आवश्यकता के अनुसार किया जा सकता है। उत्साह तथा विषाद दोनों अवस्थाओं में उचित देखभाल एवं सावधानी आवश्यक है।

=